मार्क्सवादी इतिहास लेखन

इसे सीमा विकास उपागम भी कहा गया है। वामपन्थि इतिहासकारो (मार्क्सवादी इतिहासकारो)ने इसे Duel Model को Arrested Growth Model के रूप मे परिभाषित किया है। यहाँ दो अलग-2 सेक्टरो की बात स्वीकार तो की गई है परन्तु कहा गया कि पूर्व पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली इसलिये बनी रह सकी, क्योकि उपनिवेश ने अर्द्ध सामंती व्यवस्था को बलपूर्वक संरक्षित कर उसे दृढ़ता देने की कोशिश की ——— तथा आधुनिकिरण के अपने प्रयास को रोके रखा या आधुनिकिकरण की कोई चेष्टा नहीं की। मार्क्सवादी इतिहास लेखन उपनिवेश को उत्पादन की प्रणाली नहीं, बल्कि उत्पादन का स्थिति मानतेहै। इस विचारधारा का मानना है कि प्रत्येक समाज में अलग-अलग समय में उत्पादन की प्रक्रिया होती है किन्तु महत्वपूर्ण है कि -

1. तकनीकि कैसी है, 2. तकनीकि पर नियंत्रण किसका है।

तकनीकि व मिल्कियत के आधार पर ही सामाजिक रिश्तो का निर्धारण होता है। मिल्कियत

भारत के विभिन्न भूजातिय संप्रदाय यथा सिख, सतनामी, जाट, मराठा इत्यादि

के आधार पर अभिजन वर्ग कहता
है कि खेती करो या सिर्फ उत्पादन करो।
प्रश्न उठता है कि खेती कौन कर रहा
है किसान या श्रमिक और लाभ अभीजन
वर्ग के बीच जाता है किसान या श्रमिक
व अभिजन वर्ग के बीच परिस्थितियों का व्यवहार
एवं रिश्तों को जन्म देता है जो तकनीकि
और परिस्थित के आधार पर समय-समय
पर बदलता रहता है। जैसे - दास-स्वामी
सम्बन्ध, किसान व सामन्त, मजदूर व
पूंजीपति।, इसी प्रकार उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद
का सम्बन्ध।